International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 11-13
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 18-06-2026
Accepted: 07-07-2026
Publish : 08-07-2026

Dr. Ambili MK
Associate Professor,
Department of Hindi,
M A M O College,
Manassery,Mukkam,
Kozhikode Kerala.
Pin 673602

Correspondence:
Dr. Ambili MK
Associate Professor,
Department of Hindi,
M A M O College,
Manassery,Mukkam,
Kozhikode Kerala.
Pin 673602

शरद जोशी की याद में...
कैद और कैदी की हैसियत

Dr. Ambili MK

आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्यकार के रूप में विख्यात शरद जोशी जी ने आधुनिक समाज और राजनीति के विभिन्न् विषयों को लेकर हिन्दी व्यंग्य नाटक क्षेत्र में अपना अलग अस्तित्व स्थापित की है। उनके दो व्यंग्य नाटक "एक था गधा उर्फ अलदाद खाँ" तथा "अंधों का हाथी" आधुनिक व्यंग्य की महत्वपूर्ण उपलब्धी मानी जाती है। शरद जोशी ने व्यंग्य नाटकों के साथ एकांकी नाटकों की रचना भी की है जो व्यंग्य के पैनेपन की दृष्टि से बेजोड है। "हम कहाँ थे" और "अपनी अपनी कैद" में सामाजिक विसंगतियों को ही व्यंग्यात्मक रूप में चित्रित किया है। समाज की छोटे- छोटे पहलुओं को उन्होंने इस प्रकार चित्रित किया है जिससे दर्शक व पाठक एक साथ तिलमिला हो जाते है।

समाज में व्यक्ति की विवशता, विसंगति, अकेलेपन और घबराहट पर लिखा गया व्यंग्य विधा है प्रस्तुत एकांकी। व्यंग्य ने एक नयी विधा के रूप में अपना जो अस्तित्व पा लिया है उसमें शरद जोशी जी का योगदान महत्वपूर्ण है। 'अपनी अपनी कैद' व्यंग्य एकांकी है पर बात यह है कि इसमें कौन सा व्यंग्य प्रकट हुआ है, इसे समझने के लिए व्यंग्य के विभिन्न रूपों पर भी नजर डालना जरूरी है। व्यंग्य का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जा सकता है । दर्शक या पाठक गण पर एकांकी जो प्रभाव डालता है इसके आधार पर व्यंग्य तीन प्रकार के है।

- हास्यात्मक व्यंग्य
- आक्रोशात्मक व्यंग्य
- करुण व्यंग्य

हास्यात्मक व्यंग्य

जिस व्यंग्य से हँसते हँसते विसंगतियों को व्यक्त किया जाता है, जिसकी मार मीठी होती है और जिसमें हास्य-विनोद की प्रधानता होती है, ऐसे व्यंग्य को हास्यात्मक व्यंग्य कहते है।

आक्रोशात्मक व्यंग्य

जिस व्यंग्य में हास्यात्मकता नहीं, बल्कि जीवन के कटु यथार्थ के प्रति तीव्र आक्रोश होता है, ऐसे व्यंग्य को आक्रोशात्मक व्यंग्य के अन्दर मान लेते है।

करुण व्यंग्य

जिस व्यंग्य में विसंगत वातावरण की करुणा को पूरी वेदना और सहानुभूति के साथ चित्रित किया जाता है, उसे करुण व्यंग्य कहते है।

समाज में हर व्यक्ति अपनी बनाई हुई या परिस्थितियों की कैद में ,जैसे रूढिवादी, सोच, नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों में जी रहा है। पर्दा उठने पर नजारा कोतवाली दिखायी देता है, मुंशी छोटी सी मेज पर रखे मोटे रजिस्टर में कुछ लिख रहा है, करीब एक चोर जिसके हाथ पैर बन्धे बैठा है। मुंशी जी की ड्यूटी टाईम शाम पाँच बजे से खतम हुआ है और अब रात दस बज चुके है फिर भी साहब की प्रतीक्षा में बैठा है। साहब शायद सिनेमा देखने चले होंगे। मुंशी जी की नींद ,खाना सब बन्ध हुआ है। सामने बैठा चोर मुंशी जी से कहता है "दाल- चूडा मंगा लीजिए हमारे नाम पर। हम हवालाती कैदी है, अभी मंगवाया जा सकता है। हम तो ज्यादा खायेंगे नहीं, आप ही खा लीजिए"। हाथ पाँव बँधा हुआ चोर, असल में मुंशी जी से ज्यादा स्वतंत्र है। मुंशी जी एक पुलिस अफसर होते हुए भी चोर से ज्यादा बन्धा हुआ है क्योंकि वह बडे साहब के आने पर ही अपने हाथ पाँव हिल सकता है और यह बडे साहब

ईद के चाँद सी आता है। तो बडे-बडे साहब लोगों की इन्तजार में उनके अधीनस्थ लोगों के कितने समय नष्ट होता है और उससे उन्हें कितनी परेशानियाँ महसूस करना पडता है। प्रस्तुत एकांकी में इस तथ्य का व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति है।

प्रस्तुत एकांकी नाटक "अपनी अपनी कैद" में भी परिस्थितियों की कैद में जक़डे दो पात्रों को हम देख सकते है, एक मुंशी(पुलिस अफसर) और दूसरा एक चोर है। चोर के हाथ पैर रस्सी से बँधा थे लेकिन मुंशी बिना हाथ-पाँव बँधे भी बन्धन में पडा हुआ है। वह सुबह से लेकर शाम तक के ड्यूटी के बाद भी घर नहीं लौट सकते क्योंकि अगले ड्यूटी का साहब अभी तक पहुँचा नहीं। चोर आमने-सामने बैठा है उसको ऐसी हालत में छोडकर कदापि न जा सकते, इस तरह घर वापसी का सपना सँजोये चोर के सामने बैठा है, आजादी का भ्रम लिए। वे आम आदमी के इसी संकुचित दायरे और उससे बाहर न निकलने की प्रवृत्ति पर तीखा और हास्यपूर्ण कटाक्ष करते है। सारा दिन काम करने के बावजूद थका हुआ मुंशी जी घर जाकर विश्राम लेने की प्रतीक्षा में सामने रखे रजिस्टर पर नजर दौडाकर साहब की इन्तजार में रहता है।

चोर को भी समझ में आया कि मुंशी जी कैद में है क्योंकि भूखे मुंशी जी होटल नहीं जा सकते, घर जाकर भी भूख नहीं मिटा सकते। समय का पहिया लडखडाकर भी पाँच से ..छह....नौ...दस....ग्या-रह .....तक आ गया फिर भी दोनों कैदी ही है। अब चोर भी साहब की प्रतीक्षा में बैठा है क्योंकि उन्हें भी हाथ पाँव पसारकर सोना है, बीच बीच में पूछता भी है कि साहब कब आएगा?

और पूछता भी है कि मैं यहीं थोडी जगह पर लेट जाऊँ? जोशी जी ने यहाँ व्यंग्य का चाकू और भी पैना की है , चोर मुंशी जी से कहता है कि "रजिस्टर पर रूलर लेकर पेंसिल से रेखा खींचना और छुट्टी लेना जैसे पहली बार किया हो"।

एकांकीकार ने यहाँ आधुनिक युग की विसंगति को एक पुलिस थाने के विसंगत वातावरण के जरिए उजागर किया है। यहाँ चोर को चोरी करने के कारण हाथ-पैर बांध दिया गया है। लेकिन मुंशी जी बिना किसी चोरी के ,वह भी औरों के वश हाथ-पैर बिना बाँधे ही बन्धन अवस्था में है। सामने के चोर से ज्यादा बेचैनी उसमें है क्योंकि उसकी ड्यूटी खतम हुई है, घर जाना है, बाल बच्चों से खेलना है उस वक्त नींद भी खोकर साहब की इंतजार में आँखें मूँदता - खुलता है। उस समय कैदी बंधे हुए हाथ-पैरों से लेटने का उपक्रम करता रहता है और एकाध व्यर्थ की हँसी हँस देता है। बडे साहब की देरी के द्वारा एकांकीकार ने सरकारी कार्यालयों में दिखायी देने वाले अनेक कैदियों को सामने लाने का प्रयास किया है और कैदी होने के कारण उसके बहुमूल्य वक्त बिगड भी जाता है। एकांकीकार ने चोर के द्वारा व्यंग्य की कलम बहुत जादूगरी से यहाँ चलायी है- "चोर कहाँ सुखी नहीं है, नौकरी में भी वही सुखी है जो चोर है..". संवादों के छिलके तोडने पर व्यंग्य के साथ सच्चाई का प्रकाश भी फैलता है। सभी चोर सुखी है और नौकरी, मतलब, दुनिया की सारे नौकरी करनेवालों में जो चोर है, वह सुखी है। यही एकांकीकार ने लक्ष्य किया है। आज जितना सच्चाई फिसलता है उससे ज्यादा चोरी और अत्याचार की ताजगी बढता है।

कैदी चोर को पुलिस थाने की सारी बातों का पता है कौन कब आता है, जाता है, पुलिस कर्मचारियों का ड्यूटी टाइम ,घडी कब दुरुस्त हुआ, रजिस्टर से संबन्धित सूचनाएँ, पेंसिल , चाकू वगैरह कहाँ रखा है, मुंशी जी के दुख का कारण क्या है, और बाद में पेंसिल को छीलने का काम स्वयं करता है "मुंशी जी ऐसी गिरफ्तार शुदा कैदी के हाथ में चाकू न थमा कीजिए आप। कभी मुसीबत में फँस जाएगा"। मंच पर चोर के ये संवाद सुनकर शायद दर्शक गण हँसेंगे। लेकिन एकांकीकार का लक्ष्य हँसाना नहीं बल्कि इस हास्यास्पद पल से मुंशी जी की निस्सहायता, बेबसी और विसंगत जीवन की वेदना की ओर इशारा करना है। करुण व्यंग्य इस विसंगति की उपज है और दर्शकों को इस पर सोचने को बाध्य कर देते है।

यहाँ व्यंग्य का मुख्य श्रोत तो साहब है, लेकिन मुंशी जी की हालत और मानसिक व्यापार और विवशता उसके प्रति करुणा की भावना पैदा करती है। यह भावना आँसु बहाने के लिए नहीं बल्कि समाज में ग्रस्त नौकरशाही , विसंगति और भ्रष्टाचार पर सोचने को बाध्य करता है। करुण व्यंग्य के साथ ही यहाँ चोर के संवादों और हरकतों से हँसी (हास्य) भी उत्पन्न हो जाता है और चोर के माध्यम से ही मुंशी जी की निस्सहायता , बेचारगी , ड्यूटी पर उसकी ईमानदारी व्यक्त हो जाता है। याद रखने की बात यह है कि मंच पर किसी पात्र की रोने से या मर जाने से करुण व्यंग्य अभिव्यक्त नहीं होता है। बल्कि उन्हीं तमाम विसंगतियों के प्रति दर्शकों को जागृत कर देना ही करुण व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्य है। अपनी अपनी कैद इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है।

करुण व्यंग्य के बारे में चर्चा करते समय सहज रूप में प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार एँटन चेकोव की आरंभकालीन रचना की याद आ जाती है। कहानी का नाम है Death of a government clerk. यह एक तुलनात्मक अध्ययन नहीं बल्कि देश, काल, वातावरण और संस्कृति में विभिन्नता होते हुए भी करुण व्यंग्य की अभिव्यक्ति में शरद जोशी जी की 'अपनी अपनी कैद' और एँटन चेकोव के 'डेथ आँफ ए गवर्णमेंट क्लार्क' दोनों रचनाएँ एक तराजू में रख सकते है। फर्क इतना ही है कि पहला एकांकी नाटक है और दूसरी कहानी। चेकोव की कहानी के कथानक का संक्षिप्त रूप कुछ इस प्रकार है -एक सुन्दर रात को क्लर्क इवान दिमित्रिच चेरव्यकोव अव्वल दर्जे की दूसरी पंक्ति में बैठकर दूरबीन की मदद से लक्लोचेस दे कार्निवल का आनन्द ले रहा था , खेल ऐसा देख रहा था और अपने को सबसे सुखी मनुष्य समझ रहा था...अचानक उन्हें छींक आया और जोर से छींका..

एक निचले स्तर के आदमी का छींक एक यातायात मंत्रालय के सिविल जनरल पर कितना बुरा असर पडा होगा यह सोचकर उससे

माफी मांगते है, फिर भी दिल में यही बात कचोटने लगते है, बार-बार यही सोच उसके दिल को दुखता है, बीवी भी माफी माँगने का सलाह ही देती है, अंजाने में होने वाली अपनी इस हरकत पर पछताता है...और अगले दिन आफिस जाकर उनसे माफी लिखकर मंगने को भी तैयार हो जाता है....अंत में उनका मौत हो जाता है।

चेरव्याकोव यहाँ निचले स्तर के लोगों का एक प्रतिनिधि के रूप में सामने आता है। उस समय के रूस के सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक क्षेत्र में जीवन बिताने वाले आम आदमी की परेशानियाँ और घबराहट, क्लार्क के माध्यम से यहाँ अभिव्यक्त होता है। छींक एक जैविक प्रक्रिया है लेकिन यहाँ चेकोव ने इसे सामाजिक विसंगति के साधन के रूप में बदल दिया है। कहानी से यही प्रकट हो रहा है कि इतनी पुरानी जमाने से ही रूसी जनता के बीच में अलगाव की दरार फूट पडा है और अंत में मौत की घाट तक पहुँचा देता है। कहानी का नायक बार बार अपनी गलती पर माफि माँगता है। छींक तो कभी भी गलत नहीं है लेकिन संदर्भ वश यह गलती का रूप धारण कर लेता है। नायक एक ही बात दोहराकर विसंगति का वातावरण पैदा करता है और करुण व्यंग्य इस वातावरण से जन्म लेता है। अन्दर से टूटे हुए नायक अपनी इस गलती पर ज्यादा चिंतित रहता है और बेचैनी से तडपता रहता है और मर जाता है। पाठक गण के मन में वह वेदना और सहानुभूति का पात्र बन जाता है और करुण व्यंग्य अभिव्यक्त होता है। नायक की मृत्यु से नहीं बल्कि मरने से पूर्व उसने जो जीवन बिताया है उससे ही करुणा की भावना झलकता है।

असल में 'अपनी अपनी कैद' एकांकी-नाटक में एक प्रधान पात्र जो पर्दा गिरने तक मंच पर नहीं आता है, वह ही इस नाटक में व्यंग्य का श्रोत है जो कभी सामने आ जाती तो सारा व्यंग्य का गुबार फूट जाता , इसलिए जोशी जी ने उस पात्र को व्यंग्य के पीछे ही ध्यान से संभलकर रखा है और पाठक व दर्शक गण सारा समय इस बे मौजूदगी या गैरहाजिर पात्र की प्रतीक्षा में रह जाते है। नाटक के अंत तक की यही प्रतीक्षा ही व्यंग्य को उजागर करता है। सारे व्यंग्य के सूत्रधार के रूप में यह पात्र ही काम करता है। उसके दौरान ही सारी समस्याएँ फूट पडती है, वही समस्याएँ ही व्यंग्य की जंजीरों से बंधा है। एक सरकारी 'कर्मचोरी' अपने काम में कितनी सतर्क रहनी चाहिए , किन-किन गुण उनमें होनी चाहिए या अपना दायित्व कैसे निभानी है, ये सारी बातें व्यंग्य के मुखौटा पहनकर सामने आता है। सूक्ष्मता की निशानी पूरे मंच में लहराता है । व्यंग्य का मतलब है कि किसी व्यक्ति, समाज , संस्था या व्यवस्था की कमियों, मूर्खताओं और बुराईयों को हास्य, क़टाक्ष या शब्दों के द्वारा त्रुटियों को उजागर करना है। यह एक साधारण सा भाव है फिर भी अपने आप में अजीब है। जैसे शरद जोशी जी ने 'अपनी अपनी कैद' और चेकोव ने 'डेथ ओफ ए गवन्मेंट क्लार्क' में किया है।